Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.12.04
www.ijmer.in

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:12(1), December: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd December 2022
Publication Date:10th January 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

वर्तमान परिवेश में विवेकानन्द जी के शैक्षिक एवं सामाजिक दर्शन की प्रासंगिकता:

डॉ0 सन्दीप पान्डेय
असि0प्रोफेसर–बी0एड0 विभाग
रतनसेन डिग्री कालेज बांसी, सिद्धार्थ नगर।

Abstract: स्वामी विवेकानंद का विचार, दर्शन और शिक्षा अत्यंत उच्चकोटि के है जीवन के मूल सत्यों, रहस्यों और तथ्यों को समझने की कुंजी है। उनके शब्द इतने असरदार है कि एक मुर्दे में भी जान फूँक सकता है। वे मानवता के सच्चे प्रतीक थे, है और मानव जाति के अस्तित्व को जनसाधारण के पास पहुँचाने का अभूतपूर्व कार्य किया।'' वे अद्वैत वेदांत के प्रबल समर्थक थे। भारतीय संस्कृति एवं उनके मूल मान्यताओं पर दर्शन आधारित जीवन शैली अपनाने तथा आपनी संस्कृति को जीवित रखने हेतु भारतीय संस्कृति के मूल अस्तित्व को बनाए रखने का आह्वान किया ताकि आने वाली भावी पीढ़ी पूर्ण संस्कारिक, नैतिक गुणों से युक्त, न्यायप्रिय, सत्यधर्मी तथा आध्यात्मिक और भारतीय आदर्श के सच्चे प्रतीक के रूप में विश्व में उँचा स्थान रखें''। वर्तमान में आज के युवा पीढ़ी के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने मूल संस्कृति से परिचित होवे और नैतिक गुणों से भरपूर होकर सच्चे भारतीय होने के गौरव को बनाए रखें। आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृति और जीवन शैली के आडम्बर में न फंसकर थोडें दिनों के सुख के लिए बहुमूल्य जीवन का नाश न करें।

Keywords: संस्कृति, शिक्षा, समाज एवं धर्म के संदर्भ में स्वामी विवेकानंद का दर्शन

Introduction: जिस प्रकार स्वामी जी का जीवन–दर्शन विस्तृत और समन्वयवादी है, उसी प्रकार उनका शिक्षा दर्शन भी है। वे वर्तमान शिक्षा प्रणाली के कटु आलोचक और व्यावहारिक शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। जिसकी आजकल की परिस्थितियों में अत्यन्त आवश्यकता है। आज जबकि भारत या पूरा विश्व मूल्यों को खो देने के कगार पर है। हमें विवेकानन्द की आध्यात्मिक शिक्षा की ही आवश्यकता है। उनके शिकागो में वर्ष 1893 में दिए गए भाषण ने उन्हें भारतीय दर्शन और अध्यात्म का अग्रदूत बना दिया। तब से लेकर आज तक उनके विचार युवाओं को प्रभावित करते रहे हैं। आज के दौर में जब युवा नई–नई समस्याओं का सामना कर रहे हैं, नए लक्ष्य तय कर रहे हैं और अपने लिए एक बेहतर भविष्य की आकांक्षा रख रहे हैं तो स्वामी विवेकानंद के विचार और भी प्रासंगिक हो जाते हैं। लक्ष्यविहीन हो रहे आज के भारतीय युवा के लिए जो भौतिक सुख के पीछे भागते हुए मानसिक तनाव और थकान झेल रहा है स्वामी विवेकानंद द्वारा सुझाया गया आध्यात्मिक मार्ग बहुत ही सार्थक है।

स्वामी विवेकानंद का मानना था कि अधिकतर युवा सफल और अर्थपूर्ण जीवन तो जीना चाहते हैं, लेकिन अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए वे शारीरिक रूप से तैयार नहीं होते। इसलिए स्वामीजी ने युवाओं से अपील की कि वे निर्भय बनें और अपने आपको शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाएं। वे कहते थे कि किसी भी तरीके का भय न करो। निर्भय बनो। सारी शक्ति तुम्हारे अंदर ही है। कभी भी यह मत सोचो कि तुम कमजोर हो। उठो, जागो और तब तक न रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। वह हमेशा मानसिक रूप से सशक्त होने के साथ–साथ शारीरिक रूप से मजबूत होने की बात भी कहते थे। गीता पाठ के साथ–साथ फुटबॉल खेलने को भी वह उतना ही महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने साफ कहा कि शक्ति ही जीवन है, कमजोरी ही मृत्यु है और कोई भी व्यक्ति तब तक भौतिक जीवन का सुख नहीं ले सकता, यदि वह ताकतवर नहीं है।स्वामी विवेकानंद चाहते थे कि युवा अधिक से अधिक संख्या में सामाजिक गतिविधियों में शामिल हों, जिससे न केवल समाज बेहतर बनेगा, बल्कि इससे व्यक्तिगत विकास भी होगा। उन्होंने सामाजिक सेवा के साथ आध्यात्मिकता को भी जोड़ा और मनुष्य में मौजूद ईश्वर की सेवा करने की बात कही। उनके अनुसार समाज सेवा से चित्तशुद्धि भी होती है। उन्होंने समाज के सबसे कमजोर तबके के लोगों की सेवा करके एक नए समाज के निर्माण की बात कही। युवाओं से अपील करते

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:12(1), December: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd December 2022
Publication Date:10th January 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.12.04
www.ijmer.in

हुए उन्होंने कहा कि बाकी हर चीज की व्यवस्था हो जाएगी, लेकिन सशक्त, मेहनती, आस्थावान युवा खड़े करना बहुत जरूरी है। स्वामी विवेकानन्द ऐसी शिक्षा प्रणाली को इस देश के लिये उपयुक्त समझते थे, जो व्यक्ति को जीवन में आने वाले संघर्ष के लिये तैयार करे, उसे इस योग्य बनाये कि वह चुनौतियों का डटकर मुकाबला कर सके। सच्ची शिक्षा वह है, जो व्यक्ति के चरित्र को उच्च बनाती है एवं राष्ट्रीय एकता और समाज सेवा की भावना का विकास करती है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिये कि जो व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाये, उसमें आत्म–विश्वास की भावना का विकास करे। स्वामीजी का कहना था कि दूसरे देशों में भी यदि विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों में ज्ञान मिलता हो तो उसे अवश्य अर्जित करना चाहिये। देश के औद्योगिक विकास हेतु शिक्षा की व्यवस्था के लिये प्रशिक्षण भी प्राप्त करना चाहिये, जिससे शिक्षा राष्ट्रीय विकास एवं सामाजिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सके। स्वामीजी का मत था कि छात्र को ऐसा वातावरण देना चाहिये कि वह स्वयं सीख सके क्योंकि सीखता तो वह स्वयं ही है। कोई उसे ज्ञान दूंस–ठूस कर सिखा नहीं सकता। ऐसा कोई माली नहीं होता जो पौधे का पेड़ बना दे। हाँ, वह इतना अवश्य कर सकता है कि इस बात का ध्यान रखे कि पौधे को कोई क्षति नहीं पहुँचे। इसी प्रकार शिक्षक को चाहिये कि छात्र के सीखने की स्वतन्त्रता का सम्मान कर तथा छात्र को स्वतः शिक्षित होने दे।

स्वामी जी ने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया तथा भारतीय समाज व उनके जीवन को समीप से जानने का प्रयास किया। वे इसी दौरान समाज की समस्याओं से प्रत्यक्ष हुए, बल्कि इस समाज के पुनुरुत्थान करने के लिए पूर्ण रूप से कटिबद्ध हो गए। उनका मानना था कि सम्पूर्ण अंधकार का एक मात्र कारण अशिक्षा है। उन्होंने 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात विद्या ही मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है का सिद्धांत प्रतिपादित किया। स्वामी जी ने युवाओ को अपने जीवन में डर को निकाल देने की बात को महत्वपूर्ण बताया और उसके स्थान पर ज्ञान बल, शारीरिक बल, आचरण बल और नैतिक आचरण बल को महत्वपूर्ण माना। समय और परिस्थियाँ बदलने के साथ उनके दर्शन वर्तमान भारत और विश्व में उतने ही प्रासंगिक व अनुकरणीय हैं जो तत्कालीन भारत में विद्यमान थे। स्वामी विवेकानंद लार्ड मैकाले द्वारा प्रतिपादित तत्कालीन शिक्षा प्रणाली के समर्थक नहीं थे क्योंकि इस शिक्षा का मात्र उद्देश्य क्लर्क की संख्या बढ़ाना था। स्वामी जी के सपनों का भारत ऐसा था जिसमें प्रत्येक व्यक्ति चरित्रवान हो, साथ में आत्मनिर्भर भी बने। वे युवाओं को उद्यमी, निर्भय और वीर बनने पर विशेष जोर देते थे। स्वामी विवेकानंद का बहुत स्पष्ट एवं यर्थाथ दृष्टि कोण था जैसे–

1. 'शिक्षा मनुष्य में छिपे सभी शक्तियों का पूर्ण विकास है, न कि केवल सूचनाओं का संग्रह मात्र।''
2. 'यदि शिक्षा का संबंध सूचनाओं से होता, तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ संत होते तथा विश्वकोष ऋषि बन जाते। "
3. 'शिक्षा उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है, जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है। "
4. 'हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुध्दि का विकास हो और मनुष्य स्वावलंबी बनें। परंतु मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य को अपने अंदर छिपी आत्मा की अनुभूति ही मानते थे।''
5. 'शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।''

शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए स्वामी विवेकानंद ने अनेक विधियों का प्रयोग करने के निर्देश दिए हैं– जिसमें प्रमुख रूप से व्याख्यान विधि, अनुकरण विधि, तर्क एवं विचार विमर्श विधि, निर्देशन और परामर्श विधि, प्रदर्शन एवं प्रयोग विधि, स्वाध्याय विधि तथा योग विधि आदि का विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयोग किए जाने चाहिए। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार व्यक्ति के मन में पहले से विद्यमान पूर्णता का प्रकाश ही शिक्षा है। स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्त निम्नलिखित हैं–

(1) विद्यार्थी को व्यावहारिक प्रशिक्षण देना चाहिये।
(2) जहाँ तक हो सके विद्यार्थी काल में ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये।
(3)व्यक्ति को स्वयं पर अनुशासन रखना आवश्यक है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:12(1), December: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd December 2022
Publication Date:10th January 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.12.04
www.ijmer.in

(4) व्यक्ति के विचार एवं आचरण में समन्वय होना चाहिये।
(5) छात्र सर्वांगीण विकास कर सकें, ऐसी शिक्षा होनी चाहिये।
(6) इस बात का स्मरण रखना चाहिये कि छात्र को कोई सिखा नहीं सकता, वह स्वयं सीखता है।
(7) ज्ञान तो व्यक्ति में पहले से ही है। उपयुक्त वातावरण की आवश्यकता होती है।
(8) छात्रों के साथ–साथ छात्राओं की शिक्षा पर भी समान रूप से ध्यान दिया जाना चाहिये।
(9) शिक्षक एवं शिष्य के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहये तथा शिक्षक को शिष्य के साथ स्नेह एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिये।
(10) छात्र के आध्यात्मिक विकास के साथ ही भौतिक विकास पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

स्वामी विवेकानन्द ऐसी शिक्षा प्रणाली को इस देश के लिये उपयुक्त समझते थे, जो व्यक्ति को जीवन में आने वाले संघर्ष के लिये तैयार करे, उसे इस योग्य बनाये कि वह चुनौतियों का डटकर मुकाबला कर सके। सच्ची शिक्षा वह है, जो व्यक्ति के चरित्र को उच्च बनाती है एवं राष्ट्रीय एकता और समाज सेवा की भावना का विकास करती है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिये कि जो व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाये, उसमें आत्म–विश्वास की भावना का विकास करे। इसी प्रकार शिक्षक को चाहिये कि छात्र के सीखने की स्वतन्त्रता का सम्मान कर तथा छात्र को स्वतः शिक्षित होने दे। उन्होंने प्रत्येक धर्म के विषय में कहा कि कोई व्यक्ति जन्म से हिन्दू, ईसाई, मुस्लिम, सिक्ख या अन्य धर्म के नहीं होते। उनके अपने माता पिता पूर्वज जिस संस्कृति, संस्कार या परंपरा से जुड़े रहते हैं वे उसे सीखते और आज्ञा पालन करने वाले होते हैं।मानव से बढ़कर और कोई सेवा श्रेष्ठ नही है और यहीं से शुरू होता है वस्तविक मानव की जीवन यात्रा। हमें आज आवश्यकता है स्वामी जी के आदर्शो पर चलने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ होने, उनके शिक्षा, विचार संदेश तथा दर्शन को साकार रूप में अपना लेने की। स्वामी जी के जीवन शैली को आत्मसात करके जन–जन में एकता प्रेम,और दया की नंदियॉ बहाकर नए युग की शुरूआत करने की। तो आईये जाति, धर्म, सम्प्रदाय, पंथ और अन्य संकीर्ण मानसिकता से उपर उठकर एक–दूसरे का हाथ थामकर मॉ भारती को समृद्धि ,विकास और उपलब्धि की ओर ले जाए।इस सन्दर्भ में उन्होने निम्न बिन्दुओं पर विशेष बल दिया–

1– नैतिक एवं चारित्रिक विकास – व्यक्ति का विकास वस्तुतः व्यक्ति के गुणों, चरित्र एवं उसके नैतिक विकास में ही निहित होता है। अर्थात हमारा प्रत्येक कार्य, प्रत्येक कार्य का संचालन नैतिक तथा चारित्रिक विकास के आधारशिला पर टिका होता है। स्वामी विवेकानंद ने भारत की शिक्षा के उद्देश्यों में चरित्र के विकास पर विशेष बाल दिया है। चरित्र ही मनुष्य को सत्यनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, सामाजिकता व आत्म बल से परिपूर्ण बनाता है। वे भारत की शिक्षा में बौद्धिक विकास ही नहीं अपितु इसके साथ–साथ वे चाहते थे कि भावी पीढ़ी चरित्रवान भी बने। भारत भूमि का भविष्य चरित्रवान युवाओं के कंधों पर सुरक्षित हो। स्वामी विवेकानंद के अनुसार दृ ''तुम न तो अपने पिता को बदल सकते हो, न अपनी माता को बदल सकते हो, न भाई को न बहिन को बदल सकते हो, न मित्र को और न ही पत्नी को बदल सकते हो, तुम्हारे हाथ में बस अब यही है कि तुम अपने उच्च चरित्र से स्वयं को बदल सकते हो"। तुम अपने सहारे, अपने हाथों से, अपना भविष्य गढ़ डालो। हमारा चिंतन ही हमारा चरित्र निर्माण करता है। हमारी शिक्षा प्रणाली में बालकों के दुर्गुणों को सद्गुणों में बदल देने की क्षमता निहित होना चाहिए।

2– शारीरिक विकास– शारीरिक शक्ति संसार के समस्त कार्यों को सम्पन्न करने का आधार है। स्वामी जी का मानना था कि शरीर को स्वस्थ रखना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिए। सुखों की क्रमोन्नत गणना में ''पहला सुख निरोगी काया" की बात कही गई है। स्वामी जी अपनी शिक्षा में भारत वासियों से आव्हान करते हैं कि कि स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ्य मस्तिष्क का वास होता है। शारीरिक दृढ़ता ही भारतीयों को उसका गौरव वापस दिला सकता है। उनका मानना था कि शारीरिक दुर्बलता अनेक दुर्बलताओं को आश्रय देने लगती है। ये सभी दुर्बलताऐं मनुष्य को कायर बनाती हैं। और व्यक्ति की कायरता एक दिन समाज की कायरता में बदल जाती है। अब आगे ऐसा न हो इससे उबरने के लिए मजबूत शरीर और दृढ़ इच्छा शक्ति सम्पन्न युवाओं की आवश्यकता है, जिनके शरीर में ठोस मांसपेशियाँ

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:12(1), December: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd December 2022
Publication Date:10th January 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.12.04
www.ijmer.in

और मजबूत स्नायु हों। आगे उन्होंने कहा है कि हमें खून में तेजी और स्नायुओं में बल की आवश्यकता है– लोहे के पुठ्ठे और फौलाद के स्नायु चाहिए, न कि दुर्बलता लाने वाले हीन विचार"।

स्वामी जी ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग अथवा राज योग को आवश्यक बताया और इनमें से किसी भी प्रकार के योग साधन से शरीर को पुष्ट किया जा सकता है। उनकी शिक्षाओं में भौतिक जीवन की रक्षा एवं उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक स्वस्थ्य शरीर व शारीरिक विकास को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

3– मानसिक एवं बौद्धिक विकास– किसी भी सूक्ष्म अथवा वृहद कार्य को पूरा करने का बोध इस बात पर निर्भर करता है कि उस व्यक्ति का बौद्धिक तथा मानसिक विकास किस स्तर पर हुआ है। जीवन की गतिशीलता का यह सार्वजनिक नियम होता है कि विकासात्मक चुनौतियों को स्वीकार करने के साथ विकल्पों मे बढ़ोतरी के लिए हर संभव प्रयास किए जाने चाहिए। स्वामी जी ने भारत के प्रत्येक व्यक्ति विशेष रूप से बच्चों तथा युवाओं के मानसिक व बौद्धिक विकास के लिए विभिन्न आयाम बताए। इस हेतु उन्हे आधुनिक जगत के ज्ञान–विज्ञान से परिचय कराने के लिए बौद्धिक विकास को अत्यंत आवश्यक बिन्दु के रूप में शामिल किया। स्वामी जी का मानना था कि भारत में गरीबी का सबसे बड़ा कारण बौद्धिक व मानसिक विकास में कमी है। स्वामी जी बताते हैं कि बालकों में प्रारंभ से ही बौद्धिक विकास हेतु योग, ध्यान जैसी मानसिक विकास की क्रियाओं का ज्ञान दिया जाना चाहिए ताकि वे मानसिक स्तर पर परिपक्व हो सकें और वे अपनी ऊर्जा को स्वयं, समाज व राष्ट्र निर्माण में लगा सकें।

4– व्यावसायिक शिक्षा का विकास – स्वामी जी जिस भारत में जन्म लिए थे उस समय भारत गरीबी, लाचारी, भुखमरी आदि अनेकानेक परिस्थितियों से जूझ रहा था। प्रत्येक व्यक्ति अंग्रेजों के शोषण एवं गुलामी के जंजीरों से जकड़ा हुआ था। स्वामी जी उस गुलाम भारत को बड़े ही करीब से देखा था तभी से उनके अंदर देश को मुक्त कराने की एक छटपटाहट थी। साथ ही तुलनात्मक रूप से उन्होंने उन देशों को भी देखा जो वैभवशाली जीवन जी रहे थे। उसके पीछे के कारणों को देखा जिसके पीछे ज्ञान–विज्ञान, शिक्षा, आविष्कार, तकनीकी के विकास की कहानी थी। फलस्वरूप उन्होंने शिक्षा में केवल अध्यात्म का होना पर्याप्त नहीं माना, अपितु सम्पूर्ण विकास के लिए शिक्षा द्वारा उद्योग कार्यों तथा अन्य व्यवसायों में प्रशिक्षण को समावेश करने पर विशेष जोर दिया।

5– धार्मिक तथा आत्मिक शक्ति का विकास – धार्मिकता के आधार पर स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक था। उनके अनुसार धर्म वह है जो हमें प्रेम सिखाता है तथा भेदभाव द्वेष से बचाता है। धर्म ऐसा हो जो शोषण से रहित होकर समानता का भाव पैदा करे। धार्मिक शिक्षा का वातावरण ऐसा होना चाहिए जिसका वरण समाज का प्रत्येक व्यक्ति समान रूप से कर सके। मनुष्य का सर्वांगीण विकास आध्यात्मिक पृष्ठभूमि पर होना चाहिए। भारतीय संस्कृति एवं दर्शन की शिक्षा बालक को प्रारंभ से ही देनी चाहिए उनके अनुसार जीवन का अंतिम उद्देश्य मुक्ति के लिए विद्यार्थियों को आरंभ से ही योग, ध्यान, कर्म के द्वारा धार्मिक तथा आत्मिक शक्ति का विकास किए जाने पर विशेष जोर दिया है।

6– राष्ट्र प्रेम की भावना का विकास – किसी भी राष्ट्र का विकास उसके दिए जाने वाले शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा का विस्तार एवं आत्मसात करने की क्षमता ऐसी हो जिससे नागरिकों में राष्ट्र प्रेम की भावना का विकास हो सके। राष्ट्र प्रेम समस्त भावों से सर्वोपरि है। जब स्वामी जी शिकागो सम्मेलन (अमेरिका) से वापस आए थे तब उन्होंने भारतवासियों को राष्ट्र प्रेम का एक अद्भुत संदेश दिया था, उनके एक दृष्टांत से स्पष्ट है– 'ऐ भारत ! क्या दूसरों की हाँ में हाँ मिलाकर, दूसरों की ही नकल करोगे? परमुखापेक्षी होकर इन दासों की सी दुर्बलत्ता, इस घृणित, जघन्य निष्ठुरता से ही तुम बड़े अधिकार प्राप्त करोगे? क्या इसी लज्जास्पदता से तुम वीरभोग्या स्वाधीनता प्राप्त करोगे? ऐ भारत ! तुम वीर हो ! साहस का आश्रय लो। गर्व से कहो मैं भारतवासी हूँ और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है, बोलो कि अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राम्हाण भारतवासी, चांडाल भारतवासी, सब मेरे भाई हैं, तुम भी कटिमात्र वस्त्राव्रत होकर गर्व से पुकारकर कहो कि भारत वासी मेरा भाई हैं, भारतवासी मेरे प्राण हैं, भारत के देव–देवियाँ मेरे ईश्वर हैं, भारत का समाज मेरी शिशुसज्जा, मेरे यौवन का उपवन और मेरे वार्धक्य की वाराणसी है।" स्वामी जी के उक्त वाक्यांशों से स्पष्ट है कि भारत के हर व्यक्ति को राष्ट्रप्रेम की शिक्षा से वे ओतप्रोत कर देना चाहते थे। ताकि बालकों के आचरण तथा सर्वसाधारण के अंदर राष्ट्रीय आदर्श

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:12(1), December: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd December 2022
Publication Date:10th January 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.12.04
www.ijmer.in

स्थापित कर सकें। तत्कालीन भारत में जब हम अंग्रेजों के अधीन थे तब उन्होंने अनुभव किया कि परतंत्रता समस्त हीन भावनाओं का जन्मदाता है। और हीनता हमारे समस्त दुखों का कारण। वे भारत की भूमि पर कदम रखते ही देश के युवाओं से यह आव्हान किया कि दृ तुम्हारा सबसे प्रथम कार्य देश को आजाद कराना है, चाहे इसके लिए अपना सर्वस्व बलिदान करना पड़े तो तत्पर होना चाहिए। उन्होंने उस समय ऐसी शिक्षा का समर्थन किया जिसमें बालको में देशप्रेम की भावना का विकास हो सके।

निष्कर्ष – आज जब व्यक्ति जीवन में भ्रान्ति और क्लेश से पीड़ित है,जब समाज – भ्रष्टाचार ,दुराचार और अत्याचार की व्याधियों से ग्रस्त है ,जब राजनीति मनुष्य के जीवन को उभारने सँवारने के बजाय नष्ट–भ्रष्ट कर रही है ,जब विज्ञान मनुष्य की समृद्धियों को बढ़ाने के बजाय हवा ,पानी तथा पृथ्वी पर जहर के बीज बो रहा है ,तब हमें निश्चय ही इस बात का पूरी तरह चिन्तन एवं मनन करना होगा कि किस तरह हमें इस स्थिति से मुक्ति मिल सकती है । शिक्षा ही वह माध्यम है जिसकी सहायता से हम मानव को किसी विशेष दिशा में ले जा सकते हैं। इसलिए वर्तमान परिस्थिति में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारो का अध्ययन आवश्यक चिन्तन बन गया है। वर्तमान में आज के युवा पीढ़ी के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने मूल संस्कृति से परिचित होवे और नैतिक गुणों से भरपूर होकर सच्चे भारतीय होने के गौरव को बनाए रखें। आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृति और जीवन शैली के आडम्बर में न फंसकर थोडें दिनों के सुख के लिए बहुमूल्य जीवन का नाश न करें। स्वामी जी के आदर्शों पर चलने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ रहें और शिक्षा के मूल्य को समझे गुरू को उचित आदर सम्मान दें, भौतिकता के अंधे दौड़ में मौलिकता का त्याग न करें। शिक्षा जैसी पवित्र प्रकाश जो अज्ञानता के बंधन से मुक्ति दिलाती है और जीवन के दुःखों से छुड़ाकर सुखमय ज्योतिर्मय जीवन प्रदान करती है। गुरू–शिष्य के पवित्र रिश्तों को कलंकित न करें। नैतिक आदर्शो पर चलने हेतु दृढ़ संकल्पित हो ताकि विश्व के भूपटल पर भारतीय होने के गौरव का छाप सुनहरें अक्षरों में सदैव अंकित रहें। धर्म के संबंध में जो स्वामी जी ने हमें मार्ग बताया उन पर अमल करें और साम्प्रदायिकता, धार्गिक कट्टरता, घृणा, भेदभाव, जात–पात, छुआ–छूत जैसी रांकीर्ण गानरिकता व विचारों से उपर उठकर धार्मिक सहिष्णुता को हदय में जगह दें। ईश्वर एक है और हम सब उसी के संतान है इसलिए मानवता की सेवा को व मानव प्रेम को दिल में पहला स्थान दें। यह सब तभी संभव होगा जब हम सचमुच स्वामी विवेकानंद के बताये हुए मार्ग पर चलेंगे। स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व और आदर्शो पर चिंतन करें सत्य को समझने की कोशिश करेंगे। खुद को सर्वश्रेष्ठ समझकर या अधिक बुद्धिमान जानकर स्वयं को धोखे में न रखें बल्कि वर्तमान में हम किस रास्ते में जा रहें हैं जिसका परिणाम क्या होगा ? विचार करें। स्वामी जी के कार्यो को स्मरण करें और अपनी मातृभूमि मॉ भारती के खोई हुई गौरव को समस्त भारतवासी मिलकर और दृढ़ संकल्प लेकर वापस लाने का प्रयास करें। यही स्वामी जी को सच्ची श्रद्धाजंली होगी और मॉ भारती के प्रति सच्चा समर्पण। संस्कृति देश की धरोहर व पहचान है शिक्षा ज्योंति है। धर्म मानव होने का प्रतीक है। इसालिए संस्कारिक चरित्रवान उत्तम गुणों से अपने को सजायें। शिक्षा के द्वारा देश के विकास को चरम पर ले जावें। और सर्व धर्म के द्वारा सच्चे मानवता को अपनाकर ईश्वर की सेवा करें। हम एक होकर राष्ट्रीय नवचेतना जगाएं, नए समाज एवं नवयुग, का निमार्ण करें।

संदर्भ ग्रंथ

1. स्वामी विवेकानंद (29 दिसंम्बर 1880) ''नया भारत गढ़ो'' रामकृषण मठ नागपुर
2. लाल , बंसत कुमार (1991) ''समकालीन भारतीय दर्शन '' प्रकाशक मोतीलाल बनारसी दास बंगलों रोड जवाहर नगर दिल्ली – 110007
3. गुप्त, राजेन्द्र प्रसाद (1997) ''स्वामी विवेकानंदः व्यक्ति और विचार'' प्रकाशक –राधा पब्किकेशन 4378/4ठ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली – 110002 प्रसंस्करण।
4. रहबर, हंसराज (1998) '' योद्धा संन्यासी विवेकानंद'' प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज, मदरसा रोड कश्मीरी गेट, दिल्ली–6 प्रथम संस्करण।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:12(1), December: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd December 2022
Publication Date:10th January 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.12.04
www.ijmer.in

5. सरित, सुशील एवं भार्गव अनिल (2004–2005) '' आधुनिक भारतीय शिक्षाविदों का चिंतन '' वेदान्त पब्लिकेशन, आगरा।
6. स्वामी, व्योमरूपानन्द ''विवेकानंद संचयन'' रामकृष्ण मठ नागपुर।
7. स्वामी रंगानंद (मई–अगस्त 2008) '' स्वामी विवेकानंद और भारत का भविष्य।
8. स्वामी विवेकानंद के सामाजिक दर्शन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययनः ओटागो विश्वविद्यालय, डुनेडिन।
9. समकालीन भारतीय आदर्शवाद (स्वामी विवेकानंद, श्री अरबिंदो और सर्वपल्ली राधाकृष्णन के विशेष संदर्भ में)।
10. स्वामी विवेकानंद का सामाजिक दर्शन :संतवाना दासगुप्ता रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान